IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन

डॉ. अनुपमा गंगराडे
सह प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
सेंट थॉमस कॉलेज, रूआबांधा,
भिलाई, जिला–दुर्ग

अमृत रजक
शोधार्थी (शिक्षा)

सारांश –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों (महिला–पुरूष) जिसमें 50 शासकीय विद्यालय के तथा 50 अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु सीमा संघई द्वारा निर्मित व प्रमाणित कार्यमूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। चयनित शिक्षकों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए टी–परीक्षण ज्ञात किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया।

किवर्ड : कार्यात्मक मूल्य, शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ

प्रस्तावना –

अध्यापक, शिक्षण प्रक्रिया का सच्चा सूत्रधार हैं शिक्षक के व्यक्तित्व की विद्यार्थियों पर अमिट प्रभाव पड़ता है ओर वह उसके भावी जीवन की नींव रखता है कहा गया है कि किसी समाज में अध्यापक का दर्जा उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकाचार को प्रतिबिम्बित करता है। शिक्षक देश का सबसे अधिक जागरूक तथा चेतनाशील नागरिक है इसलिए उसके द्वारा किया गया प्रयास कभी प्रभावहीन तथा असफल नहीं हो सकता है। शिक्षकों को अपने कार्य पर विश्वास होता वह समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। जिस प्रकार एक वृक्ष हमें जीवन निवर्हन के मार्ग को प्रशस्त करत है। शिक्षा कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अशिक्षित व्यक्ति दरिद्रता, शोक तथा कष्ट के अंधकार में डूबता है। इस प्रकार शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का प्रभाव पड़ता है जिससे उन्हें किसी भी कार्य को करने की लालसा समाप्त हो जाती है। इस प्रकार एक शिक्षक के लिए उपलब्ध संसाधनों की दक्षता पूर्वक तथा प्रभावपूर्ण तरीके से उपयोग करते हुए लोगों के कार्यों में सम्बन्ध करना ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकें।

कार्यात्मक का अर्थ –

व्यवहार के योग्य होना चाहिए जिसके साथ व्यवहार किया जा सके तथा काम में लाने योग्य होना चाहिए।

मूल्य का अर्थ –

किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है मूल्यों का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट पड़ता है।

मूल्य की परिभाषा –

"मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।

संबंधित शोध अध्ययन –

- **गुप्ता मधु एवं सिंह विनीता (2015), ने** व्यावसायिक जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन किया। शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 150 शिक्षकों का चयन आकस्मिक विध से किया गया। परिणाम में प्राप्त हुआ कि महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में व्यावयसायिक जवाबदेही व व्यावसायिक दबाव अधिक पाया गया। स्थायी शिक्षकों की व्यावसायिक जवाबदेही में कोई सार्थक अंतर दृष्टिगोचर नही हुआ परन्तु अस्थायी शिक्षकों की तुलना में स्थायी शिक्षकों में व्यावसायिक दबाव उच्च स्तर का पाया गया। अध्यापन अभिवृत्ति तथा अध्यापन व्यवसाय के साथ धैर्य, सावधानी, विराग, जिम्मेदारी जैसे तत्वों का महत्वपूर्ण सह–सम्बन्ध पाया गया।
- **सोम, पी. (2015)** ने अध्यापकों के व्यक्तित्व तरीकों, उनकी शिक्षण व्यवसाय तथा उससे सम्बन्धित क्षेत्रों की तरफ अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन में भोपाल शहर के 1040 महिला एवं पुरूष शिक्षकों को शामिल किया तथा निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक न तो बर्हिमुखी थे और न ही अर्न्तमुखी। पुरूष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक चिन्तनशील, सावधान, मानसिक रूप से स्वस्थ पाए गए।
- **त्यागी शालिनी (2015)** ने प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता उत्तरदेयता–मांग के संदर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन में न्यादर्श हेतु मेरठ नगर के

सरकारी, अनुदान प्राप्त तथा निजी (मान्यता प्राप्त) विद्यालयों के 150 शिक्षकों का चयन किया गया। निष्कर्षो से पता चला है कि उच्च और निम्न उच्च और मध्यम और निम्न जवाबदेही मांग के संबंध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में वयवसायिक प्रतिबद्धता समूहों में काई महत्वपूर्ण अन्तर मौजूद नहीं है। पुरूष शिक्षक की मांग के सम्बन्ध में अपनी पेशेवर प्रतिबद्धता में महत्वपूर्ण रूप से निम्न नहीं थे। महिला शिक्षक हालांकि जवाबदेही की मांग के सम्बन्ध में अपनी पेशेवर प्रतिबद्धता में काफी भिन्न हैं।

- **गोयल रंजीता (2016)** ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में न्यादर्श हेतु लिंग, शैक्षिक विषय वर्ग, निवास स्थान एवं राजकीय–निजी प्राथमिक विद्यालय के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया तथा अध्ययन में यह ज्ञात हुआ कि राजकीय व निजी दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं में उत्तम कोटी की कार्य सन्तुष्टि है।
- **कावरे सुधीर एवं विशाल कविता (2018)** ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य कक्षीय वातावरण से कार्यसंतुष्टि का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के कुल 28 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का यादृच्छिक विधि से न्यादर्श हेतु चयन किया गया। शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। जबकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया गया।
- **मित्तल, अन्नपूर्णा (2018)** ने शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्यापन विषय पर शोध किया जिसमें पाया गया कि कक्षा शिक्षण सम्बन्धी कुछ प्रचलित भ्रान्तियों का भी निवारण हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम की कक्षाओं में शिक्षा व्यवहार वस्तुतः शिक्षणीय प्रभाव की कसौटी में खरा नही उतरता है। विज्ञान का शिक्षण भी अन्य विषयों की अपेक्षाकृत कम प्रभावी हो रहा है। महिला शिक्षक पुरूषों की अपेक्षा कम प्रभावी ढंग अपनाती प्रतीत हो रही है।
- **विनिता एवं रमेश (2018)** ने विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु डबरा जिले के माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया। अध्ययन में परिणामस्वरूप पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के अध्यापन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में शहरी क्षेत्र के अध्यापकों में अध्यापन का कौशल उच्च स्तर का होता है।
- **सिंह श्रद्धा एवं यादव देवेन्द्र (2018)** ने ''माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 100 शिक्षकों का चयन किया गया है। निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक धनात्मक है। पुरुष शिक्षक तथा 25 महिला शिक्षक) अर्थात् कुल 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।
- **पंडा भरत एवं उपाध्याय आशुतोष (2021)** ने सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु वाराणसी, चंदौली एवं गाजीपुर जनपद के कुल 70 विद्यार्थियों का न्यादर्श एवं हिमकन्दुक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि विभिन्न विषय जैसे–कृषि, अभियांत्रिकी, कला, प्रशासनिक, गृह विज्ञान, राजनीति और साहित्य विषयों के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी, भिन्न–भिन्न स्तर की व्यावसायिक अभिवृत्ति रखते है।
- **व्यास पिंकी एवं भारद्वाज मधु (2021)** ने राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों का राजकीय एवं गैर राजकीय से 100 पुरुष शिक्षक एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि राजकीय विद्यालय के शिक्षक शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों से अधिक संतुष्ट पाए गए हैं। दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि में अन्तर पाया गया परन्तु प्रभावकता में राजकीय विद्यालय की अपेक्षा गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक अधिक प्रभावी शिक्षण करते पाए गए।

अध्ययन की आवश्यकता –

अध्यापक, शिक्षण एवं विद्यार्थी को जोड़ने की अत्यन्त महत्वपूर्ण इकाई हैं। उत्तम अध्यापन हेतु अध्यापक का मानसिक तनाव रहित होना अत्यन्त आवश्यक है एवं अध्यापन कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो तो तभी अध्यापन कार्य प्रभावी हो सकता है क्योंकि किसी भी विद्यार्थी व समाज का विकास गुणावत्तायुक्त, तनाव रहित, स्वस्थ वातावरण शिक्षा से प्रभावित होता है और अध्यापन की गुणवत्ता अध्यापक के व्यवहार, कार्य व सकारात्मक विचार से प्रभावित होती है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन किया गया जिससे शिक्षकों के कार्य संतुष्टि, व्यावसायिक संतुष्टि या कार्यात्मक मूल्य ज्ञात किया जा सकें। जिससे ज्ञात हो कि किन कारणों से शिक्षकों के व्यवहार अध्यापन के प्रति अनुरूप है। ताकि उनके शिक्षकीय गुणों को उत्तरोत्तर प्रगति हो सके जो विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास में सार्थक सिद्ध हो सकें।

अध्ययन का उद्देश्य –

- शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन करना।
- शासकीय शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन करना।
- अशासकीय शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति का परिकल्पना के परीक्षण हेतु आंकड़ें एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमा –

- प्रस्तुत अध्ययन कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 शिक्षकों (महिला–पुरूष) तक सीमित किया गया है।
- यह अध्ययन शासकीय विद्यालय के 50 तथा अशासकीय विद्यालय के 50 शिक्षकों (महिला– पुरूष) तक सीमित है।

न्यादर्श –

अध्ययन में परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए कोरबा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 शिक्षकों (महिला–पुरूष) जिसमें शासकीय विद्यालय के 50 तथा अशासकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषण मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी–मूल्य का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध की समस्या कोरबा जिले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} –

शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्या को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.1

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
शासकीय	50	173.4	23.1	2.35
अशासकीय	50	163	21.1	
df = 98 (1.66) t > (0.05) , सार्थक अंतर पाया गया				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_{02} –

शासकीय शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्या को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.2

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
शिक्षक	25	172.5	22.7	0.22
शिक्षिका	25	174	23.8	
df = 48 (1.67) t < (0.05) , सार्थक अंतर नही पाया गया				

. अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नही पाया गया।

. अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{03} –

अशासकीय शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अशासकीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्या को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.3

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
शिक्षक	25	173.5	21.6	0.27
शिक्षिका	25	171.9	20.8	
df = 48 (1.67) t < (0.05) , सार्थक अंतर नही पाया गया				

. अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नही पाया गया।

. अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

विवेचना –

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि शासकीय शिक्षकों (महिला–पुरूष) की कार्य संतुष्टि अशासकीय शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च स्तर की होती है। अशासकीय शिक्षकों में कार्य का तनाव, कार्य के प्रति जिम्मेदारी तथा कार्य भार शासकीय शिक्षकों की तुलना में अधिक होता है तथा अशासकीय शिक्षकों के मानदेय भी कम होता है। अतः उन्हें अतिरिक्त आय हेतु अतिरिक्त कार्य करने की आवश्यकता होती है इस कारण कार्य के प्रति समर्पण में कमी आती है। अधिक परिश्रम करने के पश्चात् भी शासकीय शिक्षकों की तुलना में अधिक आय अर्जित नही कर पाते है। इसके मुकाबले शासकीय शिक्षकों की मानदेय अधिक होने कारण उनकी जीवन संतुष्टि उच्च स्तर की होती है। उन्हें जीवनयापन हेतु आर्थिक रूप से किसी भी प्रकार की बाधाओं का सामना करना नही पड़ता है। अशासकीय शिक्षकों में जॉब सुरक्षा की कमी पाई जाती है जिससे शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों के कार्यमूल्य में सार्थक अंतर पाया जाता है।

सुझाव –

इस अध्ययन के परिणाम के आधार पर अशासकीय शिक्षकों के कार्यमूल्य बढ़ाने की अत्यधिक आवश्यकता है। उनका समय–समय पर नैतिक मूल्यों हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना भी आवश्यक है। अशासकीय शिक्षकों के मानसिक तनाव तथा अतिरिक्त कार्य भार में कमी करते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य हेतु योग व ध्यान के लिए समय–समय विशेष आयोजन करना चाहिए। जिससे उनकी कार्य के प्रति जिम्मेदारी और लगाव में वृद्धि हो। योग्यता एवं कार्य के अनुसार समय–समय पर वेतन मानदेय में वृद्धि होने से उनके अतिरिक्त कार्य करने में कमी आयेगी जिससे उन्हें मानसिक तनाव या अन्य किसी प्रकार की आर्थिक संकट का सामना नही करना पड़ेगा। कार्य संतुष्टि में वृद्धि होने से कार्य के प्रति समर्पण बढ़ेगा। जिससे उनके कार्यमूल्य में वृद्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **गुप्ता मधु एवं सिंह विनीता (2015),** व्यावसायिक जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन, *Journal of Educational of Psychological Research*, 5(1), Jan-2015, 132-135
- **कावरे सुधीर एवं विशाल कविता (2018),** उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य कक्षीय वातावरण से कार्यसंतुष्टि का अध्ययन, *Review of Research*, Aug-2018, 7(11), 1-6
- **मित्तल, अन्नपूर्णा (2018),** अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ ओर तकनीकी (2008) *न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कार्पोरेशन,* आगरा, पृ.सं. 2
- **पंडा भरत एवं उपाध्याय आशुतोष (2021)** सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन, *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 2021, 9(9), 310-329.
- **रंजीता गोयल (2016),** प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *International Journal of Applied Research*, 2017; 3(1): 59-63
- **सिंह श्रद्धा एवं यादव देवेन्द्र (2018),** माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, *International Journal of Scientific Research in Science and Technology(IJSRST)*, 2018, 4(7), 866-876
- **सोम, पी.(2015)**"रिसर्च पब्लिकेशन्स" (2000) नई दिल्ली, 2000 पृ. 96.
- **त्यागी शालिनी (2015),** प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का उत्तरदेयता–मांग के संदर्भ में अध्ययन, *Scholarly Research Journal For Interdisciplinary Studies*, Nov-Dec 2015, 3(21), 1587-1596.
- **व्यास पिंकी एवं भारद्वाज मधु (2021),** 'कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं प्रभावकता का तुलनात्मक अध्ययन, *National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)*, 2021, 6(11), 1-9.
- Vinita & Ramesh (2018), विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन, *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education JASRAE* 15(1), 927-933.